संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०२४
वर्ष : ३३ अंक : ११ (निरंतर अंक : ३७७)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

“८७ वर्षीय निर्दोष संत पूज्य बापूजी की हो शीघ्र रिहाई !” : देशभर में हो रही माँग

मैंने अपना जन्मदिन बापूजी के चरणों में इसलिए समर्पित किया है कि... - आचार्य कौशिकजी महाराज पढ़ें पृष्ठ ९

आशारामजी महाराज परम संत हैं। वे निश्चित रूप से निर्दोष हैं। उनको आदरसहित शीघ्र रिहा करना चाहिए। - श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

विद्यार्थियों को पूज्य बापूजी का उद्बोधन

तुम्हारा भविष्य तुम्हारे ही हाथों में...

प्यारे विद्यार्थियो ! तुम भारत का भविष्य, विश्व का गौरव और अपने माता-पिता की शान हो। तुम्हारे भीतर बीजरूप में ईश्वर का असीम सामर्थ्य छुपा हुआ है। जिन्होंने भी अपनी सुषुप्त योग्यताओं को जगाया वे महान हो गये। इतिहास के पन्नों पर उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। वे संसार में अपनी अमिट छाप छोड़ गये और मरकर भी अमर हो गये। वास्तव में इतिहास उन चंद महापुरुषों और वीरों की ही गाथा है जिनमें अदम्य साहस, संयम, शौर्य और पराक्रम कूट-कूटकर भरा हुआ था। तुम्हारे भीतर भी ये शक्तियाँ बीजरूप में पड़ी हैं। महापुरुषों के मार्गदर्शन में चल के अपनी इन शक्तियों को विकसित करके तुम भी महान हो जाओ।

हे युवानो ! संसार में ऐसी कोई वस्तु या स्थिति नहीं है जो संकल्पबल और पुरुषार्थ के द्वारा प्राप्त न हो सके। पूर्ण उत्साह और लगन से किया गया पुरुषार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाता।

प्यारे विद्यार्थियो ! तुम जो बनना चाहते हो उसके लिए आवश्यक सामर्थ्य तुम्हारे भीतर ही सुषुप्त अवस्था में पड़ा है। उसे जगाकर तुम सफलता की बुलंदियों को छू सकते हो। तुम वर्तमान में चाहे कितने भी निम्न श्रेणी के विद्यार्थी क्यों न हो लेकिन इन्द्रिय-संयम, एकाग्रता, पुरुषार्थ और दृढ़ संकल्प के द्वारा उच्चतम योग्यता प्राप्त कर सकते हो। इतिहास में ऐसे कई दृष्टांत देखने को मिलते हैं। पाणिनि नाम का बालक पहली कक्षा में वर्षों तक अनुत्तीर्ण ही होता रहा पर बाद में वही बालक अपने दृढ़ संकल्प, पुरुषार्थ, उपासना और योग के अभ्यास से संस्कृत व्याकरण का विश्वविख्यात रचयिता बना।

महान, तेजस्वी व श्रेष्ठ विद्यार्थी बनना हो तो...

अपनी उन्नति में बाधक दुर्बलता के विचारों को जड़ से उखाड़ फेंको। अपनी शक्तियों को नष्ट करनेवाली बुरी आदतों व तम्बाकू, गुटखा आदि व्यसनों में पड़ना, टी.वी. चैनलों के भड़कीले कार्यक्रमों एवं स्मार्टफोन आदि में समय व चरित्र बिगाड़ना, फिल्में व अश्लील वेबसाइटें देखना, विडियो गेम्स आदि से आँखें बिगाड़ना - यह अपना पतन आप आमंत्रित करना है। हलके संग एवं बुरी आदतों का त्याग, सत्शास्त्रों का अध्ययन, सत्संग-श्रवण, ध्यान तथा सारस्वत्य मंत्र, गुरुमंत्र या भगवन्नाम का जप - ये बुद्धिशक्ति व सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। तुम्हारा भविष्य तुम्हारे ही हाथों में है। तुम्हें महान, तेजस्वी व श्रेष्ठ विद्यार्थी बनना है तो अभी से दृढ़ संकल्प करके त्याज्य चीजों को छोड़ के जीवन-विकास में उपयोगी बातों को अपनाओ। मनुष्य-जीवन के परम लक्ष्य परमात्मप्राप्ति में लग जाओ। हजार बार फिसल गये तो भी फिर से हिम्मत करो... विजय तुम्हारी ही होगी।

पूज्य बापूजी का पावन संदेश

मंगलमय संदेश

ईश्वर के लिए जीना सार्थक है

ईश्वर के लिए जो जीता है वह आदरणीय होता है । शत्रु को ठीक करने के लिए जो जीता है वह कुत्ते की योनि में जायेगा, मित्र से मिलने के लिए जो जीता है वह मोहमयी जन्म-मरण की यात्रा में जायेगा, धन-सम्पदा के लिए जो जीता है वह सर्पयोनि में जायेगा परंतु जिसने भगवान के लिए जी लिया है, ऐ हे !... वह तो भगवन्मय हो जाता है । भगवान ही सार हैं, बाकी सब आता-जाता है :

आनी-जानी दुनिया फानी★,
शाश्वत एक है आत्मदेव का ज्ञान ।

कभी-कभी संत ऐसी बात बोलते हैं कि उनकी वह अठखेलीभरी मधुमय, तटस्थ, सारगर्भित वाणी याद करके आनंद-आनंद आता है, खून बढ़ जाता है । वसिष्ठजी महाराज कहते हैं : ''हे रामजी ! जैसे सदाशिव महासुंदर गौरी के नृत्य देखनेवाले और गौरीसंयुक्त हैं, उनको वानरी का नृत्य हर्षदायक नहीं होता, वैसे ही ज्ञानवान को जगत के पदार्थ हर्षदायक नहीं होते ।''

गौरीजी नृत्यकला, गायन और वाद्य कला में निपुण हैं, उनकी निपुणता के आगे भी शिवजी अपने आत्मसुख को सर्वोपरि मान के उसीमें निमग्न रहते हैं तो बंदरी नाच के शिवजी का क्या बिगाड़ लेगी ?

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।
पापं तापं च दैन्यं च घ्नन्ति सन्तो महाशयाः ॥

'गंगा पाप को, चन्द्रमा ताप को और कल्पतरु दीनता को हर लेता है जबकि संत-महापुरुष पाप, ताप एवं दीनता को एक साथ ही हर लेते हैं ।'

हँसते-खेलते पाप-ताप और दीनता सदा के लिए हर लेने का सामर्थ्य महत्-जनों में है । छूमंतर नहीं होता है, हरते-हरते हर लेते हैं । मेरे गुरुदेव ने मेरी दीनता हर ली, अब कभी मेरे को गिड़गिड़ाने का मन में नहीं होता । डीसा में साधना करता था उस समय की बात है । एक बार उपासना की और हनुमानजी आ गये, बोले : ''मैं आ गया हूँ ।''

मैंने कहा : ''मेरी सत्ता के बिना तुम कहाँ से आते हो ?''

ऐसा नहीं कि हनुमानजी आये तो मैं गिड़गिड़ाने लग जाऊँ, 'यह दे दो, वह दे दो...', नहीं ।

साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल !

बापू के लिए तो आरोप लगा दिया, उधर भेज दिया लेकिन बापू के बेटों (बड़ बादशाह, पीपल बादशाह) को तो पूज रहे हैं न लोग ! हमने ऐसी व्यवस्था की है कि कितना भी कुप्रचार करो, झक मारो परंतु पाप-ताप और दीनता हरनेवाला काम हम नहीं तो हमारे बच्चे 'बड़' भी करते रहते हैं । १७१ से अधिक बड़ व पीपल लगे हैं, जिनको मैंने अपने हाथों से लगाया है और फोटो आदि उसके प्रमाण भी हैं । बाकी कुछ लोग देखादेखी बड़ लगा देते हैं, अपना फोटो रख देते हैं; फिर वहाँ लोग तो क्या आने हैं, कुत्ते आकर क्या करते हैं वे ही जानें । नकल करने में अकल चाहिए, नहीं तो शकल बदल जाती है ।

तब तक दुःखों से पिंड नहीं छूटेगा

जैसे आये-गये मेहमान की उपस्थिति कोई महत्त्व नहीं रखती है ऐसे ही है संसार ! हम नित्य हैं, बाकी सब अनित्य है; हम शाश्वत हैं, बाकी सब नश्वर है । तो हम कौन हैं ? डाह्याभाई... अमथाभाई... नहीं ! यह शरीर का काल्पनिक नाम है और मन भी एक फुरना है, बुद्धि भी

★ नश्वर, नाशवान

भगवन्नाम, भगवद्-जनों के संग व भगवत्कथा की शक्ति

मंगलमय संदेश

देवर्षि नारदजी जयंती

२४ मई को देवर्षि नारदजी जयंती है । नारदजी इतने महान कैसे हुए यह रहस्य बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं :

नारदजी पूर्वजन्म में दासीपुत्र थे । बचपन में पिता का स्वर्गवास हो गया । माँ पेट पालने के लिए कथा की जगह पर झाड़ू-बुहारी करने जाती । अब बेटे को कहाँ छोड़ के आये, तो वहीं कथा में बिठा देती । जाने-अनजाने सत्संग मिल गया उस दासीपुत्र को । सत्संग से अंतर का सुख उभरा । भगवन्नाम जपने लगा । भगवान और संतजनों में प्रीति हुई । अंदर का रस जगा, परमात्मा को पाने की तड़प जगी । उसने आगे की यात्रा करवायी, खूब साधना हुई । आकाशवाणी हुई : ''पुत्र ! अभी तुम मेरा तेज और दिव्य सामर्थ्य झेल नहीं सकोगे, अगले जन्म में तुम मेरे खास पार्षद होओगे ।''

दूसरे जन्म में वे ही दासीपुत्र देवर्षि नारद होकर भगवान वेदव्यासजी का मार्गदर्शन करते हैं । श्रीकृष्ण नारदजी को देख के खड़े हो जाते हैं, व्यासजी नारदजी का आदर करते हैं । नारदजी व्यासजी के गुरु हो गये, दीक्षागुरु नहीं परंतु व्यवहार-गुरु तो हो गये ।

वेदव्यासजी ने १८ पुराण रचे, वेदों का वर्गीकरण किया फिर भी उनको संतुष्टि नहीं हो रही थी कारण कि उन्होंने देखा, 'मनुष्य अब भी न करने जैसा करते हैं, न खाने योग्य खाते हैं, न सोचने जैसा सोचते हैं । लोग अब भी दुःख से मुक्त नहीं हैं ।' वेदव्यासजी बड़े उदास रहते थे ।

नारायण नारायण नारायण... करके नारदजी आये, बोले : ''व्यासजी ! आप उदास दिख रहे हैं !''

वेदव्यासजी : ''ठीक कहते हो देवर्षि ! मुझे उदासी इस बात की है कि मैंने वेदों का वर्गीकरण किया, महाभारत ग्रंथ रच दिया, लाख श्लोक हैं उसमें, पुराण रचे, ब्रह्मसूत्र व धर्मशास्त्रों की रचना की, चारों ओर यज्ञ-याग फैलाये, कर्मकांड का विस्तार किया और जो विषय-विकारों में डूबे हुए थे उन्हें धर्म-नियंत्रित बाह्य सुख-भोग की कुछ छूट भी शास्त्रों के माध्यम से दिला दी फिर भी लोग धर्म के मार्ग पर नहीं चलते, दुःखी हैं ।''

''व्यासजी ! आपने ग्रंथ रचे, छूटछाट दी, तिथि-त्यौहार व जप-तप का महत्त्व भी बताया लेकिन लोगों को रस चाहिए । रस तो है भगवत्सुमिरन-भगवद्ज्ञान में, भगवान से अपना संबंध जोड़ने में । महाराज ! भगवद्रस से जुड़ने का कोई ग्रंथ नहीं रचा आपने । युग-युग में भगवान ने अवतार लेकर लीलाएँ की हैं । समाधि करके देखिये और उनका वर्णन करिये ताकि लोगों का मन भगवान में लगे । भगवच्चिंतन, भगवच्चर्चा के बिना असली रस आयेगा नहीं तो यह संसारी रस छूटेगा नहीं । व्यसनियों का व्यसन, कामियों का काम, लोभियों का लोभ, मोहियों का मोह छूट जाय, भगवत्कथा ऐसी रसीली है । जिसमें हास्य रस हो, वीर रस हो, शृंगार रस हो ऐसे भगवद्भाव उभारनेवाले ग्रंथ की रचना कीजिये ।''

तब वेदव्यासजी ने 'श्रीमद्भागवत' ग्रंथ की रचना की । नारदजी ने उनका बड़ा मार्गदर्शन किया । व्यासजी बड़े आदर से नारदजी को मार्गदर्शक गुरु मानते होंगे । दासीपुत्र और वेदव्यासजी के मार्गदर्शक ! दासीपुत्र और उनके आने पर भगवान श्रीकृष्ण खड़े हो जाते हैं !

विद्यार्थी संस्कार

हृदय की पवित्रता दिलाती सफलता – पूज्य बापूजी

जिसने अपने जीवन का मूल्य समझा वह चाहे व्यापारी की गद्दी पर हो, चाहे न्यायाधीश की कुर्सी पर हो वह अपने बाहर के सुख और ऐश से ज्यादा अपने हृदय की पवित्रता पर ध्यान देता है ।

मंगोलिया में चांगसेन नाम के न्यायाधीश थे । वे बड़े ईमानदार थे । वे यह मानते–जानते थे कि धन–सम्पदा और सुविधाओं के कारण अपना हृदय बिगाड़ना यह बेवकूफी है । एक सुबह उनका निकट का मित्र उनके पास पैसों से भरी हुई थैली लाया, बोला : ''यह लीजिये, आप घूस नहीं लेते मैं जानता हूँ पर यह तो मैं आपको प्रेम से भेंट कर रहा हूँ । सरकारी पगार से जितनी व्यवस्था होती है उससे तो आपके बच्चे पढ़ने में बड़ी तकलीफ महसूस कर रहे हैं । गाड़ी–मोटर खरीदने में भी आपको तकलीफ है । आप लीजिये यह पैसों की थैली । फलानी छोटी–सी फाइल है हमारे केस की, उस पर जरा आप थोड़ी मीठी नजर रखिये, और कुछ नहीं चाहते आपसे ।''

उन न्यायाधीश ने कहा : ''मैं रूखी रोटी खाऊँगा, पैदल चल के बच्चों को पढ़ने भेजूँगा लेकिन मन को अशुद्ध करनेवाली तेरी यह घूस मुझे और मेरे बच्चों को अंदर से खोखला कर देगी । तू भले विश्वसनीय मित्र है, किसीको नहीं बतायेगा फिर भी मेरा अंतर्यामी आत्मा तो मुझे डंकेगा (कचोटेगा), मेरी बेईमानी तो मुझे खायेगी । इसलिए मेहरबानी करके मुझे बेईमान मत बनाओ ।''

अहमदाबाद में भी ऐसे ही एक न्यायाधीश थे 'देसाई साहब' । उनके पास एक व्यक्ति गया, बोला : ''यह लाख रुपया है । (जब १३० रुपये तोला सोना मिलता था उस जमाने का लाख रुपया ।) आप यह ले लीजिये देसाई साहब ! मेरे जैसा व्यक्ति नहीं मिलेगा आपको । मैं आपका निकट का पहचानवाला हूँ । लाख रुपया आप मत ठुकराइये, मान लीजिये ।''

देसाई साहब ने कहा : ''मेरे जैसा न्यायाधीश भी नहीं मिलेगा, लाख रुपये को ठोकर मार के अपने हृदय को सँभालनेवाला । आप ये पैसे वापस ले जाइये ।''

जिन्होंने अपने विषय–विलास से ज्यादा अपनी नैतिकता को, अपने अंतःकरण की पवित्रता को मूल्य दिया ऐसे लोग वास्तव में चमके । अब्राहम लिंकन वकालत करते थे परंतु बेईमानी करके कमाना वे पसंद नहीं करते थे । वकीलों की दृष्टि में वे सफल साबित नहीं हुए । फिर उन्होंने उद्योग किया सच्चाई से तो भागीदार ने धोखा दे दिया । लोगों ने कहा कि उद्योग करने में भी आप सफल नहीं हुए । किंतु अब्राहम लिंकन कितने सफल हुए दुनिया जानती है !

चुनाव लड़े पर बेईमानी से नहीं, बार–बार हारे फिर भी उन्होंने ईमानदारी नहीं छोड़ी । अपने हृदय की पवित्रता की कीमत वे ज्यादा जानते थे । आखिर क्या हुआ पता है आपको ? उनकी

पाठशालाओं में हो ऐसी

ज्ञान व प्रभुप्रेम वर्धक मधुमय चर्चा

– पूज्य बापूजी

गुरुजी ने अपने प्यारे शिष्यों से पूछा : ''बेटे ! बताओ, भगवान को हम क्यों मानें ?''

एक विद्यार्थी ने कहा : ''गुरुजी ! भगवान को मानने से भगवान के गुण हमारे में बढ़ेंगे और जिन भगवान ने दुनिया बनायी उन भगवान को नहीं मानेंगे तो हम गुणचोर (कृतघ्न) कहे जायेंगे ।''

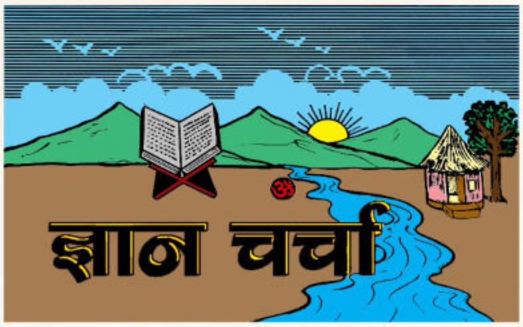

गुरुजी ने पूछा : ''भगवान ने दुनिया बनायी ऐसा हम कैसे मान लें ?''

दूसरा विद्यार्थी बोला : ''भगवान ने दुनिया बनायी यह माने बिना कोई चारा भी नहीं है । घड़ी है तो उसको बनानेवाला भी है । बनानेवाले को चाहे नहीं देखा फिर भी किसी-न-किसीने यह घड़ी बनायी है । ऐसे ही सूरज किसी मनुष्य की बनावट नहीं है । समुद्र, नदियाँ, नाले – ये सब भगवान ने बनाये हैं और भगवान इनका नियमन-नियंत्रण भी करते हैं ।''

गुरुजी जानते तो थे लेकिन विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़े इसलिए उन्होंने तर्क किया : ''हम कैसे मान लें कि भगवान नियंत्रण करते हैं ?''

''गुरुजी ! चरवाहा नहीं होता है तो भेड़ें भी ठीक से नहीं चरती हैं । आप विद्यालय में नहीं होते तो लड़के भी ठीक से नहीं पढ़ते । ऐसे ही कोई नियामक है और वह सर्वव्यापक है, सबके हृदय में है । हम कोई गलती करते हैं, बुरा काम करते हैं तो अंदर लानत बरसाता है, कोई नहीं देखे फिर भी हृदय की धड़कनें बढ़ती हैं और अच्छा काम करते हैं तो अंदर हिम्मत आती है ।''

''भगवान क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं और किसको मिलते हैं ?'' इस प्रकार प्रश्न करके फिर गुरुजी ने ही उत्तर दिया : ''भगवान क्या करते हैं ? भगवान कुछ नहीं करते केवल सत्ता देते हैं । जो जैसा करना चाहता है उसको उस अनुरूप सत्ता मिलती है और भगवान की प्रकृति में उनका जैसा विधान किया हुआ है उसके अनुसार कर्म का फल मिलता है । भगवान कुछ नहीं करते फिर भी सब कुछ करने की शक्ति भगवान ही देते हैं । सारा ज्ञान, सारी शक्तियाँ, सारा आनंद, सारे सद्गुण, सारा सामर्थ्य भगवान से आता है । तो भगवान बल देते हैं, सत्ता देते हैं और सबके कर्मों के नियामक हैं । भगवान कहाँ रहते हैं ? जैसे शक्कर मिठाई में व्याप्त है, ओत-प्रोत है... मिठाई में एक जगह पर शक्कर है, दूसरी जगह पर नहीं है – ऐसा होता है क्या ? सोने के गहने हैं तो सोना कहाँ है ? गहना सोने से ही बना है । ऐसे ही सबमें भगवान छिपे हैं, भगवान की सत्ता है । भगवान को जो सच्चाई से चाहता है उसीको वे मिलते हैं । अब तुम लोग बताओ, भगवान किस पर खुश होते हैं ?''

एक विद्यार्थी बोला : ''जो माता-पिता की आज्ञा मानता है ।''

''अच्छा, मोहन ! तुम बताओ, भगवान किस पर खुश होते हैं ?''

मोहन ने कहा : ''भगवान उसी पर खुश होते हैं जो गरीबों पर दया करते हैं । जो विद्यार्थी अमीर होने पर भी अमीरी का घमंड नहीं करता और गरीब विद्यार्थियों की मदद करता है तथा गरीब होने पर 'मैं गरीब हूँ, गरीब हूँ, यह मिले,

बड़ा दानी कौन ?

– पूज्य बापूजी

एक बार दुर्योधन के यहाँ भाट–चारण यशोगान करने लगे : ''दुर्योधन महाराज की जय हो ! दुर्योधन बड़े दानी हैं, बड़े दयालु हैं...''

यह सुनकर दुर्योधन खुश हो गया । उनको पुरस्कार दिया, बोला : ''तुम लोग यशोगान करने मेरे पास ही आया करो, मैं तुमको खूब दान दूँगा । कर्ण के पास मत जाना ।''

यह बात भगवान जान गये और स्वयं ब्राह्मण का रूप लेकर उसके पास गये, बोले : ''दुर्योधन ! तुम बड़े दानी हो । मैं बूढ़ा ब्राह्मण दान लेने आया हूँ ।''

दुर्योधन : ''ब्राह्मण ! क्या चाहिए ?''

''मुझे धन, सुवर्ण या हाथी–घोड़े नहीं चाहिए । मुझे अपने पितरों का श्राद्ध करने गयाजी जाना है । बूढ़ा हूँ, चल नहीं सकता । थोड़े दिन के लिए मेरा बुढ़ापा तुम ले लो और अपनी जवानी मुझे दे दो । मैं पिंडदान करके आऊँगा तो तुम्हारी जवानी तुम्हें वापस दे दूँगा ।''

उस जमाने में संकल्प से बुढ़ापा दिया जाता था, जवानी ली जाती थी और वापस भी करते थे । अब भी किन्हींका तीव्र संकल्प है तो एक–दूसरे को रोगमुक्त कर देते हैं और क्या–क्या हो जाता है !

दुर्योधन चौंका तो ब्राह्मण ने याद दिलाया : ''सभा में तुमने भाट–चारणों को कहा था कि 'मैं कर्ण से भी ज्यादा दान दूँगा ।' अब तुम दान देना चाहो तो दो, नहीं तो हम जाते हैं ।''

''ठहरो, मैं अपनी पत्नी से पूछ के आता हूँ ।''

दुर्योधन पत्नी के पास गया । पत्नी बोली : ''नाथ ! तुम उनको जवानी दे दोगे, बूढ़े हो के पड़े रहोगे तो तुम्हारी सेवा कौन करेगा ? यह उचित नहीं है ।''

दुर्योधन तो चाहता था कि लानत पत्नी के नाम जाय, मेरी इज्जत क्यों बिगड़े ? बोला : ''ब्राह्मणदेवता ! मेरी पत्नी ने मना कर दिया है ।''

''तुम्हींने तो कहा था कि 'मेरे से दान ले लेना, मैं तो कर्ण से भी ज्यादा दान दे सकता हूँ ।' अच्छा, हम चले ।''

वे ब्राह्मण गये कर्ण के पास और वही बात दोहरायी ।

कर्ण ने कहा : ''ब्राह्मणदेव ! यह मेरा शरीर नश्वर है । इस नश्वर शरीर से भोग तो हमने भोग लिये हैं । तीर्थों में, गया में पिंडदान करके पितरों का उद्धार करने में अगर मेरी जवानी काम आती है तो भले खुशी से आप लो । आपका बुढ़ापा मैं ले लेता हूँ ।''

...तो व्यक्ति निरहंकार हो के भगवान के स्वरूप में एकाकार हो जायेगा ।

''कर्ण ! मैं ऐसे नहीं लूँगा । अभी एक राजा के पास गया था । वह देना चाहता था परंतु उसकी पत्नी ने मना कर दिया । हो सकता है कि तुम्हारी पत्नी भी मना कर दे ।''

महापातकनाशक तथा अगाध पुण्यराशि प्रदायक व्रत

३ जून को अपरा एकादशी है । यह बड़े-बड़े पापों से मुक्ति दिलाती है और अगाध पुण्यलाभ कराती है, साथ ही हृदय में भगवत्प्रीति उभारने का अवसर प्रदान करती है । इसके माहात्म्य के विषय में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा : ''जनार्दन ! ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम क्या है ? उसका माहात्म्य क्या है ? प्रभु ! आप मुझे इस बारे में बताने की कृपा कीजिये ।''

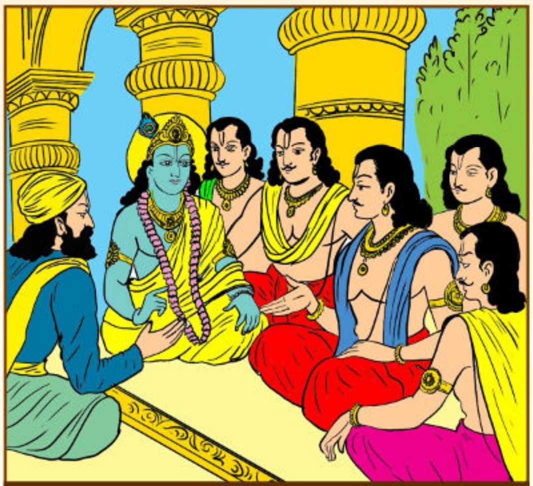

अपरा एकादशी पर विशेष

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''युधिष्ठिर ! तुमने सम्पूर्ण लोकों के हित के लिए बहुत उत्तम बात पूछी है । राजेन्द्र ! ज्येष्ठ (अमावस्यांत वैशाख) मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम 'अपरा' है । यह बहुत पुण्य प्रदान करनेवाली, बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाली और भगवान हरि में प्रीति दिलानेवाली है ।

ब्रह्महत्या से दबा हुआ, गर्भस्थ बालक को मारनेवाला, परनिंदक तथा परस्त्रीलम्पट पुरुष भी अपरा एकादशी के सेवन से निश्चय ही पापरहित हो जाता है । जो झूठी गवाही देता है, माप-तौल में धोखा देता है, बिना जाने ही नक्षत्रों की गणना करता है और कूटनीति से आयुर्वेद का ज्ञाता बनकर वैद्य का काम करता है - ये सब नरक में निवास करनेवाले प्राणी हैं । परंतु अपरा एकादशी के सेवन से ये भी पापरहित हो जाते हैं ।

यदि कोई क्षत्रिय अपने क्षात्रधर्म का परित्याग करके युद्ध से भागता है तो वह क्षत्रियोचित धर्म से भ्रष्ट होने के कारण घोर नरक में पड़ता है । जो शिष्य विद्या प्राप्त करके स्वयं ही गुरुनिंदा करता है वह भी महापातकों से युक्त हो के भयंकर नरक में गिरता है । किंतु अपरा एकादशी के सेवन से ऐसे मनुष्य भी सद्गति को प्राप्त होते हैं ।

(यदि उपरोक्त पाप पूर्व में हुए हों तो उनका प्रायश्चित इस व्रत से होगा लेकिन यदि कोई ऐसे पाप इस भाव से करता रहे कि 'अभी तो ऐसा दुष्कृत कर लेता हूँ, बाद में एकादशी द्वारा इसका प्रायश्चित कर लूँगा' तो वह पापमुक्त नहीं होगा कारण कि की हुई गलती न दोहराना यही हर दोष का मुख्य प्रायश्चित है, बाकी सब गौण प्रायश्चित हैं ।)

माघ का सूर्य मकर राशि में हो उस समय प्रयाग में स्नान से जो पुण्य होता है, काशी में शिवरात्रि के व्रत, जागरण, जप और स्नान से जो पुण्य होता है, गया में पिंडदान करने से पितरों को तृप्ति मिलती है और पितरों की तृप्ति से पुण्यभागी व्यक्ति जिस पुण्यमय ऊँचाई को पाता है, बृहस्पति के सिंह राशि पर स्थित होने पर गोदावरी (नाशिक) में स्नान करने से जो पुण्य होता है, बदरिकाश्रम की यात्रा के समय केदारनाथ के दर्शन से और बदरीतीर्थ के सेवन से जो पुण्य होता है, सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र में स्नान, जप, यज्ञ और दान करने से जो फल होता है वही फल अपरा एकादशी के व्रत से प्राप्त हो जाता है ।

अपरा एकादशी का माहात्म्य पढ़ने या सुनने से सहस्र गौदान का फल मिलता है ।'' ❐

मृतक की सद्‌गति हेतु लाभकारी

मोक्षदायी श्रद्धांजलि किट

हर कोई चाहता है कि उनके संबंधियों की अंत्येष्टि शास्त्रोक्त विधि से हो पर आवश्यक सामग्री व मार्गदर्शन के अभाव में कई बार यह सम्भव नहीं हो पाता । इस समस्या के निवारण हेतु महिला उत्थान मंडल द्वारा 'मोक्षदायी श्रद्धांजलि किट' बनायी गयी है, जिसमें हैं - श्रीमद्‌भगवद्‌गीता, 'मंगलमय जीवन-मृत्यु' सत्साहित्य, तुलसी की लकड़ियाँ, गंगाजल, रुद्राक्ष मनका आदि सामग्री व इनकी उपयोग-विधि से संबंधित पर्चा (पैम्फलेट) ।

(सद्‌गतिप्रदायक भजन देखने-सुनने हेतु विडियो लिंक : bit.ly/sadgatibhajan)

रक्त शुद्धिकर, पित्तशामक

नीम अर्क

यह दाद, खाज, खुजली, कील, मुँहासे तथा पुराने त्वचा-विकारों में अत्यंत लाभदायी है । यह उत्तम कृमिनाशक एवं दाह व पित्त शामक है तथा बालों को झड़ने से रोकता है । पीलिया, रक्ताल्पता (anaemia), रक्तपित्त, अम्लपित्त (hyperacidity), उलटी, प्रमेह, विसर्प (herpes), रक्तप्रदर, गर्भाशय शोथ, खूनी बवासीर तथा यकृत (liver) व आँखों के रोगों में लाभदायक है ।

होमियो लीवर केअर

लीवर टॉनिक

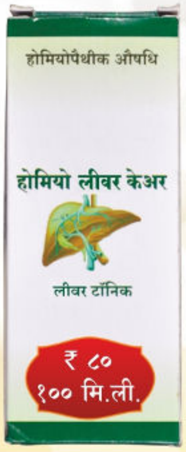

पीलिया, यकृत (liver) का बढ़ना या सिकुड़ना तथा अन्य समस्याओं में लाभदायी

पुदीना अर्क

✲ पाचक, भूखवर्धक, स्फूर्तिदायक ✲ पेट के विकारों, जैसे - अरुचि, अजीर्ण, अफरा (gas), उलटी, दस्त एवं कृमि में विशेष उपयोगी ✲ बुखार, खाँसी, मूत्राल्पता तथा दमा व त्वचा-रोगों में लाभदायी

शीतलता-प्रदायक, स्वादिष्ट गुणकारी पेय

लीची पेय : लीची करती है कमजोरी को दूर, शरीर को बनाती है पुष्ट तथा पाचनक्रिया को करती है मजबूत । **सेब पेय :** सेब है उत्तम स्वास्थ्यवर्धक, पोषण और स्वाद से भरपूर । **अनन्नास पेय :** अनन्नास है रोगप्रतिरोधक क्षमता, पाचनशक्ति तथा नेत्रज्योति वर्धक । **मैंगो ओज :** आम है सप्तधातुवर्धक व उत्तम हृदयपोषक ।

wt. = Net weight

२७० मि.ली. एवं ६०० मि.ली. में भी उपलब्ध

गर्मी से राहत दिलानेवाले स्वास्थ्यवर्धक शरबत

हर घूँट में मधुरता व शक्ति का एहसास

गुलाब शरबत : सुमधुर, जायकेदार, शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला । **पलाश शरबत :** जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला । **ब्राह्मी शरबत :** स्मरणशक्तिवर्धक, दिमाग को शांत व ठंडा रखने में सहायक

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

अपनी व औरों की सात-सात पीढ़ियाँ तारनेवाली भगीरथ सेवा का संकल्प लेते साधक

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st May 2024

करोड़ों का जीवन सँवारनेवाली ऋषि प्रसाद का सदस्यता-अभियान

गुरुसेवा कर भाग्य जगाया, गुरुदेव से स्पर्शित प्रसाद भी पाया (रुद्राक्ष माला योजना)

अनमोल धन वितरित करते धनभागी (ऋषि प्रसाद वितरण)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी